RE: C.B.S.E. QUESTION PAPERS DISTORTING IMAGE OF RURAL AREAS

श्री नरेश यादव (बिहार): उपसभाध्यक्ष जी, मै आपके माध्यम से सदन का ध्यान इस देश के गावों में रहने वाले गरीब और उनके बच्चों की ओर आकर्षित करना चाहता हूं । महोदय, 3 मार्च को जो केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड है उसने अपने अंग्रेजी के प्रश्र पत्र के माध्यम से गावों के संस्कारों पर हमला करने का प्रयास किया है । महोदय, उस प्रश्र-पत्र में यह पूछा गया है कि गांव की बच्चियां स्कूल क्यों नहीं जाते है तो अंग्रेजी में, विदेशी भाषा में देश की अस्मिता पर हमला करने की साजिश के तहत यह बताया गया कि – गांव की बच्चियां, लड़कियां इसलिए स्कूल नही जाती हैं क्योंकि उनके कपड़े संभावना रहती है । इसलिए हमारी बच्चियां गावों में स्कूल नहीं जाती है । इस तरह के प्रश्र-पत्रों के माध्यम से आखिर क्या बताना चाह रहे हैं? यह जो केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड है, यह क्या कहना चाह रहा है? महोदय, मैं आपके माध्यम से कहना चाहता हूं कि गांव की बच्चियों के कपड़े भले ही फटे हों लेकिन स्वाभिमान फटा हुआ नहीं है । आज भी गांव की बच्चियों का स्वाभिमान है । स्कूल में पढ़ने के लिए दस-दस किलोमीटर बच्चियां पैदल जाती है । अगर एक भी बच्ची पर कोई आंख उठा ले तो पूरा गांव उसके साथ हो जाता है । यह गांव की सभ्यता और संस्कृति और संस्कृति है । इसलिए केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के माध्यम से आज जो साक्षरता का अभियान हम पूरे देश में चला रहे हैं उससे हम क्या मैसेज दे रहे हैं कि बच्चियां गांव में नहीं पढ़ें? इसलिए मैं आपके माध्यम से चाहता हूं कि माननीय प्रधान मंत्री जी हाउस में आकर इस पर चाहता हूं कि माननीय प्रधान मंत्री जी हाउस में आकर इस पर बयान दें कि ऐसे गलत प्रश्न-पत्र के जरिए हमारी सभ्यता पर आक्रमण क्यों किया गया? बहुत-बहुत धन्यवाद ।

उपसभाध्यक्ष (श्री अजीत जोगी): वीणा वर्मा जी, आप एक वाक्य में यह लीजिए ।

श्रीमती वीणा वर्मा (मध्य प्रदेश): माननीय उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं इससे अपने आपको सम्बद्ध करते हुए यही कहना चाहूंगी कि चाहे वह आपको मीडिया हो या शिक्षा का क्षेत्र, आजादी के 50 वर्ष अभी बीतने जा रहे है, अब तक हम तरह की मानसिकता नहीं बना पाए है कि महिलाओं की छवि सुधरे । महिलाओं की छवि सुधारने के लिए मै पहले भी संसद के इस सदन में प्रश्न पूछ चुकी हूं । मेरा यह कहना है कि सी.बी.एस.सी व एन.सी.आर.टी. की किताबों का सिलेबस रेव्यू होना चाहिए और खास तौर से उसमें महिलाओं की छवि विशेष करके उभरे और एक अच्छा मैसेज जाए । इसके लिए पहले भी प्रश्न पूछा जा चुका है । इसलिए क्या कोई ऐसी कमेटी बनायेंगे जो सिलेबस को रेव्यू कर और इस तरह की छवि सुधारने का काम करें?.. (**व्यवधान**)... और जिन्होने ऐसे प्रश्न-पत्र बनाए है उनके खिलाफ किस तरह से एक्शन लेंगे, यह बतायें?

श्रीमती चन्द्रकला पांडेय (पश्चिम बंगाल): माननीय उपसभाध्यक्ष जी, मै अपने को इससे सम्बद्ध कर्ते हुए केवल यह कहना चाहूंगी कि गांव गरीबी और लड़कियों का मखौल उड़ाते हुए इस तरह के जो सवाल पूछे जा रहे है उनका मकसद क्या है और शिक्षकों के बारे में जो यह विद्यार्थियों के मन में गलत धारणा घर कर जाएगी, इसका क्या मकसद है? यह मै माननीय शिक्षा मंत्री जी से चाहूंगी कि वह आकर इसका जवाब दें ।

श्रीमती मालती शर्मा (उत्तर प्रदेश): मान्यवर, मैं भी अपने को इस विषय से सम्बद्ध करती हूं ।

RE: MURDER OF DELHI POLICE OFFICER IN KALKA MAIL

श्री विष्णु कान्त शास्त्री (उत्तर प्रदेश): माननीय उपसभाध्यक्ष जी, पिछले कई सप्ताहों से उत्तर प्रदेश और बिहार की कानून और व्यवस्था की स्थिति निरन्तर बिगड़ती चली जा रही है और उसका एक घिनौना रूप ट्रेनो में डकैतियों के रुप में उभर रहा है । यह बहुत ही चिंताज़नक स्थिति है कि आज कोई भी सुरक्षा का अनुभव नहीं करता जब गाडियां बिहार में प्रवेश करती है ।

श्री नरेश यादव (बिहार): ट्रेनों में डकैती सिर्फ बिहार में ही नहीं पूरे देश में हो रही है । यह सिर्फ बिहार का ही सवाल नहीं है । आप सिर्फ बिहार का ही क्यों कह रहे है? ....(**व्यवधान**)...

श्री विष्णु कान्त शास्त्री: दूसरे क्षेत्रों में भी जिन प्रेदेशों में डकैतियां होती है मैं सब की भर्त्सना करता हूं, लेकिन हिस घटना का वर्णन मै कर रहा हूं वह मुगल सराय में उत्तर प्रदेश में और बिहार के बहुत निकट हुई और बिहार के ही लोग उसमें सम्बद्ध है ऐसा लोगों को लगता है, इसलिए मैंने इसका उल्लेख किया । मै यह कहना चाहता हूं कि भारत सरकार आखिर ट्रेनों की डकैतियों को रोकने का काम किस तरह हाथ में लेगी